

भारतीय उच्चायोग पोर्ट लुई

विश्व हिंदी सचिवालयके शासी परिषद(Governing Council) की दूसरी बैठक के अवसर पर

माननीय मंत्री महोदया द्वारा दिया जाने वाला प्रारंभिक अभिभाषण

- माननीय डा. वसंत कुमार बनवारी, मॉरीशस गणराज्य के शिक्षा और मानव संसाधन मंत्री तथा विश्व हिंदी सचिवालय के शासी परिषद के मॉरीशस पक्ष के अध्यक्ष
- माननीय डा. अरविन बुलेल, मॉरीशस गणराज्य के विदेश मंत्री तथा क्षेत्रीय एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री
- माननीय श्री मुखेश्वर चूनी, मॉरीशस गणराज्य के कला और संस्कृति मंत्री
- श्रीमती प्रेमिला ओबिलेक, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यकारी बोर्ड की मॉरीशस पक्ष की अध्यक्षा
-
- मॉरीशस पक्ष द्वारा नामांकित हिंदी के विद्वान सदस्य श्री अजामिल माताबदल तथा श्री सत्यदेव टेंगर
- भारतीय पक्ष के हिंदी विद्वान सदस्य श्री रत्नाकर पांडेय
- श्री संजय मित्तल, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय
- प्रो. (डॉ) बिजय कुमार, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
- विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
- उपस्थित अधिकारीगण

विश्व हिंदी सचिवालय के शासी परिषद (Governing Council) की आज दूसरी बैठक हो रही है। इस अवसर पर मैं भारतीय पक्ष की ओर से शासी परिषद की सह-अध्यक्षा होने के नाते आप सबका अभिनंदन करती हूँ। अभी हाल ही में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने मॉरीशस की अपनी सफल यात्रा पूरी की जिससे सभी क्षेत्रों में दोनों देशों के आपसी संबंध और मज़बूत हुए। आशा करती हूँ कि भविष्य में ये संबंध और भी मजबूत होंगे।

विश्व हिंदी सचिवालय (World Hindi Secretariat) मॉरीशस के लोकप्रिय नेता और राष्ट्रपिता स्वर्गीय सर शिव सागर रामगुलामजी तथा भारत की प्रधानमंत्री स्व. श्रीमति इंदिरा गांधी जी का देखा एक ऐसा सपना था जो मॉरीशस की धरती पर साकार हो रहा है। मॉरीशसवासियों ने अपने पुरखों की धरोहर को बहुत संभाल कर रखा है और हिंदी उसका एक बेहद अहम हिस्सा है। इसलिए मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय(World Hindi Secretariat) की स्थापना एक उचित कदम था।

हिंदी के महत्व को अब पूरा विश्व समझने लगा है। क्योंकि यह आर्थिक ताकत बनकर तेज़ी से उभर रहे भारत की एक प्रमुख भाषा है, साथ ही पूरी दुनिया में बसे भारतीयों और भारतवंशियों की भी भाषा है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का तो मानना है कि “विश्व अर्थ व्यवस्था में एक प्रमुख

बाज़ार के रूप में उभर कर सामने आ रहे भारत को जानने-समझने के लिए हिंदी भाषा की जानकारी वैश्विक अनिवार्यता बनती जा रही है। ” इसी बात को ध्यान में रख कर भारत सरकार विदेशों में हिंदी को बढ़ावा देने के सभी संभव प्रयास करती रही है। वह दोनों देशों के बीच एक सांस्कृतिक सेतु (cultural bridge) का काम करती है।

सिर्फ अपने देश में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर भी हिंदी को मान्यता दिलाने के लिए मॉरीशस, भारत के साथ हमेशा कदम से कदम मिला कर चलता रहा है। विश्व हिंदी सचिवालय में मॉरीशस सरकार की बराबर की सक्रिय भागीदारी उसका एक उदाहरण है।

मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय ने औपचारिक तौर पर अपना काम काज 11 फरवरी 2008 से शुरू किया, इस दृष्टि से यह एक नई संस्था है और किसी भी नई संस्था को शुरू-शुरू में कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, मुझे विश्वास है कि समय के साथ सब ठीक हो जाएगा।

आज हमारे बीच, विश्व हिंदी सचिवालय से जुड़े दोनों देशों के सदस्य मंत्रीगण एवं अधिकारीगण उपस्थित हैं, साथ ही दोनों देशों के नामित विद्वान भी बैठे हुए हैं। आप सब के सक्रिय सहयोग से सचिवालय तथा हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने के हमारे साझे प्रयास को बल मिलेगा।

आशा करती हूँ कि बैठक के बाद विश्व हिंदी सचिवालय के कामकाज में तेज़ी आएगी तथा हम विश्व-मंच पर हिंदी की भूमिका को व्यापक बनाने और एक दिन इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के लक्ष्य, प्राप्त करने में सफल हो पाएंगे।

आखिर में, मैं मॉरीशस की सरकार तथा यहां उपस्थित उनके मंत्रीगण को शानदार आतिथ्य (hospitality) के लिए धन्यवाद देती हूँ तथा Governing Council के माननीय सदस्यों को Council की भारत में होने वाली अगली बैठक के लिए अभी से आमंत्रण देती हूँ।